भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

- सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोनल, आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार, प्रेस की भूमिका, मध्यमवर्ग का उदय तथा ब्रिटिश शासन के आर्थिक परिणाम ने भारत में राष्ट्रवादी आकांक्षा को जन्म दिया। इसी राष्ट्रवाद के सापेक्ष में 1885 में कांग्रेस की स्थापना से पूर्व विविध राजनीतिक संस्थाओं का जन्म हुआ।

कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संस्थाएं:

- 1837 में लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी की स्थापना हुई यह संस्था बिहार तथा उड़ीसा के जमींदारों की थी तथा इसका मुख्य उद्देश्य था अपने वर्ग के हितों की रक्षा करना।
- बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843) इसका उद्देश्य आम जनता के हितों की रक्षा करना था।
- 851 में लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी तथा बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी का विलय करके ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन की स्थापना की गई।
- 1852 में मद्रास नेटिव सोसाइटी और बॉम्बे एसोसिएशन की स्थापना हुईं।
- पूना सार्वजनिक सभा (1870) इस संस्था की स्थापना जस्टिस महादेव गोविंद रानाडे, जी. बी. जोशी, एस. एच चिपलाकर तथा अन्य सहयोगियों ने की।
- ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन (1866) – इंग्लैण्ड में राजनैतिक प्रचार करने के उद्देश्य से भारतीय छात्रों जैसे फिरोज शाह मेहत्ता, बदरूद्दीन तैय्यब जी, दादा भाई नौरोजी तथा मनमोहन घोष ने इस संस्था की स्थापना की थी।
- इण्डियन एसोसिएशन (1876) - इस संस्था की स्थापना सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस के द्वारा की गयी। इण्डियन एसोसिएशन को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पूर्वगामी कहा गया है।

कांग्रेस की स्थापना:

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 ई0 में ए. ओ. ह्यूम के द्वारा किया गया। प्रारम्भ में इस संस्था का नाम इंडियन नेशनल यूनियन था जिसे 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नाम दिया गया। ए. ओ. ह्यूम 1885 से 1906 ई0 तक कांग्रेस के महासचिव थे।
- काँग्रेस का पहला अधिवेशन पूना में होना था, परन्तु पूना में प्लेग फैल जाने के कारण बंबई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विश्वविद्यालय में 28 दिसंबर 1885 ई0 को कांग्रेस की प्रथम बैठक हुई।
- कांग्रेस के पहले अध्यक्ष का पद व्योमेश चंद्र बनर्जी को मिला। इसमें लगभग 100 लोगों ने भाग लिया जिसमें से 72 लोगों को सदस्य के रूप रूप में मान्यता दी गई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय भारत का वायसराय लार्ड डफरिन था।

कांग्रेस के प्रथम 4 अधिवेशन के अध्यक्ष:

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष
1885	बम्बई	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
1886	कलकत्ता	दादा भाई नौरोजी
1887	मद्रास	बदरूद्दीन तैय्यब जी
1888	इलाहाबाद	जार्जयूल

- कांग्रेस की अध्यक्षता करने वाले प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरूद्दीन तैय्यब जी थे। जिन्होनें 1887 में अध्यक्षता की थी।
- कांग्रेस की अध्यक्षता करने वाला प्रथम अंग्रेज जार्जयूल (1888) था।

- नरमपंथी नेता दादा भाई नौरोजी को 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इण्डिया' कहा जाता है।
- कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष एनी बेसेन्ट थी। इन्होने 1917 में कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष सरोजिनी नायडू थी जिन्होनें 1925 ई0 में कानपुर सम्मेलन की अध्यक्षता की।
- कांग्रेस की सर्वाधिक बार अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी और पण्डित नेहरू ने की थी।
- मौलाना अबुल आजाद कांग्रेस के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष होने का सम्मान प्राप्त किया है।
- कांग्रेस के बेलगांव अधिवेशन 1924 की अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की थी।
- कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन 1891 में कांग्रेस के नाम में 'राष्ट्रीय' शब्द को जोड़ा गया।
- 1896 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में बंकिमचटर्जी द्वारा स्वरचित गीत 'वन्दे मातरम्' को गाया गया।
- कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1906) में दादा भाई नौरोजी ने अपने भाषण में पहली बार 'स्वराज' का उल्लेख किया।
- कांग्रेस के सूरत अधिवेशन (1907) में कांग्रेस का प्रथम विभाजन हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी बोस ने की थी। इस अधिवेशन में कांग्रेस नरमदल व गरमदल में विभाजित हो गयी। गरमदल का नेतृत्व तिलक ने किया।
- कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1911) में पहली बार रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित राष्ट्रगान जन गण मन' गाया गया।
- कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916) में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की संयुक्त बैठक हुई इस अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार ने की थी।
- 1920 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (विशेष अधिवेशन) में गाँधी जी के द्वारा असहयोग का प्रस्ताव रखा गया। इसकी अध्यक्षता लाला लाजपत राय ने की थी।
- 1923 में हुए काकीनाड़ा कांग्रेस सम्मेलन में अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना की गई।
- 1926 में हुए कांग्रेस के गुवाहटी सम्मेलन में पहली बार कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए खादी पहनना अनिवार्य कर दिया गया।
- 1929 ई0 के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता प० जवाहर लाल नेहरू ने की थी, इसी अधिवेशन में पहली बार पूर्ण स्वराज्य का नारा दिया गया। लाहौर अधिवेशन (1929) में पहली बार 26 जनवरी को प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।
- 1931 ई0 के कराची अधिवेशन में मौलिक अधिकारों तथा राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रमों से सम्बद्ध प्रस्ताव पास किया गया।
- 1938 ई0 का कांग्रेस अधिवेशन हरिपुरा नामक गांव में हुआ जिसकी अध्यक्षता सुभाष चंद्र बोस ने किया।
- 1939 ई0 कांग्रेस का अधिवेशन त्रिपुरी में हुआ। इसमें गाँधी जी ने पट्टाभि सीता रमैय्या को अध्यक्ष पद के लिए खड़ा किया था लेकिन सुभाष चन्द्र बोस विजयी रहे परन्तु गाँधी जी के विरोध के कारण सुभाष चन्द्र बोस ने इस्तीफा दे दिया। शेष अधिवेशन के लिए डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद को अध्यक्ष पद सौंपा गया। त्रिपुरी का यह अधिवेशन त्रिपुरी संकट' नाम से भी जाना जाता है।
- अमृतसर अधिवेशन 1919 में बाल गंगाधर तिलक ने पहली बार भाग लिया था।
- भारत की स्वतंत्रता के समय जे. बी. कृपलानी कांग्रेस के अध्यक्ष थे।
- 1920 में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता सी. विजय राघवाचार्य ने की थी।
- 1922 में इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता चितरंजन दास द्वारा की गयी ।
- नागपुर अधिवेशन में पहली बार भारतीय रियासतों के प्रति अपनी नीति घोषित की थी।

कांग्रेस से सम्बन्धित महत्वपूर्ण कथन

- लार्ड डफरिन ने कांग्रेस को सूक्ष्मदर्शीय अल्पसंख्यक जनता का प्रतिनिधि कहा था।
- वायसराय कर्जन ने कहा - कांग्रेस अपनी मौत की घड़िया गिन रही है, भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है। कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद कर सकूँ।
- कर्जन ने कांग्रेस को 'गंदी चीज और देश द्रोही संगठन' कहा।
- बंकिम चंद्र चटर्जी ने कहा कि कांग्रेस के लोग पदों के भूखे है।

- तिलक ने कहा 'वर्ष में एक बार मेढ़क की तरह' टर्राने से कुछ नहीं मिलेगा।
- लाला लाजपत राय ने 'कांग्रेस सम्मेलन को शिक्षित भारतीयों के वार्षिक राष्ट्रीय मेले की संज्ञा दी।
- अश्विनी कुमार दत्त ने कांग्रेस के सम्मेलन को तीन दिनों का तमाशा कहा।
- 1885 से 1904-5 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर उदारवादी कहे जाने वाले नेताओं का वर्चस्व था इन्हें उदारवादी या नरमपंथी इसलिए कहा जाता था क्योंकि इनका लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा व्यक्त करना तथा अपनी मांगों का प्रतिवेदनों भाषणों और लेखों के माध्यम से सरकार के सम्मुख प्रस्तुत करना, इन्हें ब्रिटिश सरकार की न्यायप्रियता पर पूरा विश्वास था।
- नरमपंथी कहे जाने वाले नेताओं में दादा भाई नौरोजी सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता मदन मोहन मालवीय, दीनशावाचा आदि थे।
- कांग्रेस के उदारवादी नेता असंवैधानिक तरीकों द्वारा भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे, इसीलिए इन्होनें अपनी मांगों को प्रार्थना पत्रो प्रतिवेदनों स्मरण पत्रों एवं शिष्ट मंडलों के द्वारा सरकार के सम्मुख प्रस्तुत करने का तरीका अपनाया।
- कांग्रेस की उदारवादी नीतियों का बहुत अधिक परिणाम न निकलने पर 1905-1913 तक इस चरण में नव राष्ट्रवाद या उग्रवाद के उदय को बल मिला।
- कांग्रेस की उदारवादी नीतियों से उग्रवादियों का मोहभंग हो गया। कांग्रेस के उग्रवादी नेताओं में बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र), अरविन्द घोष और विपिन चंद्रपाल (बंगाल), लाला लाजपतराय (पंजाब)
- स्वराज, स्वदेशी और बहिष्कार का नारा सर्वप्रथम तिलक ने ही दिया।
- कांग्रेस की उदारवादी नीतियों से असंतुष्ट एक ओर जहाँ कांग्रेस के अन्दर उग्रवादी गुट का उदय हुआ वही देश के अन्दर व बाहर क्रान्तिकारी आंदोलन का प्रार्दुभाव हुआ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन			
अधिवेशन	**वर्ष**	**अध्यक्ष**	**स्थान**
पहला	दिसम्बर, 1885	डब्ल्यू० सी० बनर्जी	बम्बई
दूसरा	दिसम्बर, 1886	दादाभाई नौरोजी	कलकत्ता
तीसरा	दिसम्बर, 1887	बदरूद्दीन तैयबजी	मद्रास
चौथा	दिसम्बर, 1888	जार्ज यूले	इलाहाबाद
पांचवा	दिसम्बर, 1889	बिलियम बेडरबर्न	बम्बई
छठाँ	दिसम्बर, 1890	फिरोजशाह मेहता	कलकत्ता
सातवाँ	दिसम्बर, 1891	पी. आनन्द चार्ल्	नागपुर
आठवाँ	दिसम्बर, 1892	डब्ल्यू. सी. बनर्जी	इलाहाबाद
नौवां	दिसम्बर, 1893	दादाभाई नौरोजी	लाहौर
दसवां	दिसम्बर, 1894	वेब	मद्रास
ग्याहरवाँ	दिसम्बर, 1895	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	पूना
बारहवाँ	दिसम्बर, 1896	एम.ए. सयानी	कलकत्ता
तेरहवाँ	दिसम्बर, 1897	एम. सी. शंकरन	अमरावती
चौहहवाँ	दिसम्बर, 1898	ए. एम. बोस	मद्रास
पन्द्रहवाँ	दिसम्बर, 1899	रमेश चन्द्र दत्त	लखनऊ
सोलहवाँ	दिसम्बर, 1900	एन. जी. चन्द्रावरकर	लाहौर
सत्रहवाँ	दिसम्बर, 1901	दिनशा ई० वाचा	कलकत्ता
अट्ठारहवाँ	दिसम्बर, 1902	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	अहमदाबाद
उन्नीसवाँ	दिसम्बर, 1903	लालमोहन घोष	मद्रास
बीसवाँ	दिसम्बर, 1904	सर हेनरी कॉटन	बम्बई

इक्कीसवाँ	दिसम्बर, 1905	गोपाल कृष्ण गोखले	वाराणसी
बाईसवाँ	दिसम्बर, 1906	दादाभाई नौरोजी	कलकत्ता
तेईसवाँ	दिसम्बर, 1907	रास बिहारी घोष	सूरत (स्थगित)
तेईसवाँ	दिसम्बर, 1908	रास बिहारी घोष	मद्रास
चौबाइसवाँ	दिसम्बर, 1909	मदन मोहन मालवीय	लाहौर
पच्चीसवाँ	दिसम्बर, 1910	सर विलियम वेडरबर्न	इलाहाबाद
छब्बीसवाँ	दिसम्बर, 1911	विशन नारायन दत्त	कलकत्ता
सत्ताईवाँ	दिसम्बर, 1912	आर० एन० मुधोकर	बाँकीपुर
अट्वाइवाँ	दिसम्बर, 1913	नवाब सैय्यद मुहम्मद	करांची
उन्तीसवाँ	दिसम्बर, 1914	भूपेन्द्र नाथ बसु	मद्रास
तीसवाँ	दिसम्बर, 1915	एस० पी० सिन्हा	बम्बई
इक्तीसवाँ	दिसम्बर, 1916	अम्बिका चरण मजूमदार	लखनऊ
बत्तिसवाँ	दिसम्बर, 1917	एनी बेसेण्ट	कलकत्ता
तैतीसवाँ	दिसम्बर, 1918	मदन मोहन मालवीय	दिल्ली
चौतीसवाँ	दिसम्बर, 1919	मोती लाल नेहरू	अमृतसर
पैतीसवाँ	दिसम्बर, 1920	सी. विजय राघवाचार्य	नागपुर
छत्तीसवाँ	दिसम्बर, 1921	सी० आर० दास	अहमदाबाद
सैतीसवाँ	दिसम्बर, 1922	सी० आर० दास	गया
अड़तीसवाँ	दिसम्बर, 1923	मौलाना मुहम्मद अली	काकी नाड़ा
उनतालिस वाँ	दिसम्बर, 1924	महात्मा गांधी	बेलगांव
चालीसवां	दिसम्बर, 1925	सरोजनी नायडू	कानपुर
इकतालिस वाँ	दिसम्बर, 1926	एस० श्रीनिवास अयंगर	गुवाहाटी
बयालीसवाँ	दिसम्बर, 1927	एम० ए० अंसारी	मद्रास
तैरालीसवाँ	दिसम्बर, 1928	मोती लाल नेहरू	कलकत्ता
चौवालीसवाँ	दिसम्बर, 1929	जवाहर लाल नेहरू	लाहौर
पैतालीसवाँ	मार्च, 1931	सरदार वल्लभ भाई पटेल	करांची
छयालिसवाँ	अप्रैल, 1932	अमृत रणडछोड़दास सेठ	दिल्ली
सैतालिसवा	अप्रैल, 1933	श्रीमती नेल्ली सेनगुप्ता	कलकत्ता
अड़तालीसवाँ	अक्टूबर, 1934	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	बम्बई
उन्नासवाँ	अप्रैल, 1936	जवाहर लाल नेहरू	लखनऊ
पच्चासवां	दिसम्बर, 1936	जवाहर लाल नेहरू	फैजपुर
इक्यानवाँ	फरवरी, 1938	सुभाष चन्द्र बोस	हरिपुर
बावनवाँ	मार्च, 1939	सुभाष चन्द्र बोस	त्रिपुरी
तिरपनवाँ	मार्च, 1940, 1941-45	मौलाना अबुल कलाम आजाद	रामगढ़
चौवनवाँ	नवम्बर, 1946	आचार्य जे० बी० कृपलानी	मेरठ
पचपनवाँ	दिसम्बर, 1948	डॉ० पट्टाभि सीतारमैया	जयपुर

क्रांतिकारी आन्दोलन

- कांग्रेस की उदारवादी नीतियों से असंतुष्ट उग्र विचारों के लोगों ने क्रान्ति का मार्ग चुना। जिसके कारण देश के अन्दर व देश के बाहर दो चरणों में क्रांतिकारी आंदोलन हुए -
  1. क्रांतिकारी आंदोलन प्रथम चरण (1905-1915)
  2. क्रांतिकारी आंदोलन द्वितीय चरण (1924-34)

भारत के अन्दर क्रांतिकारी गतिविधियाँ:

- 1918 में पेश की गई विद्रोही समिति की रिपोर्ट में महाराष्ट्र के पुणे जिले के चितपावन ब्राह्मणों को आतंकवाद (भारत में) शुरू करने का श्रेय दिया गया।
- दामोदर तथा बालकृष्ण चापेकर ने 22 जून 1897 को पुणे के प्लेग कमिश्नर रैण्ड तथा एमहर्स्ट की हत्या कर दी। कालांतर में चापेकर बंधु को फांसी दे दी गई।
- 1899 ई0 में विनायक दामोदर सावरकर द्वारा मित्रमेला संस्था की स्थापना की गयी कालांतर में यही संस्था अभिनव भारत समाज के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- अभिनव भारत के सदस्य अनन्त लक्ष्मण करकरे ने नासिक के जिला मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या कर दी। इस हत्या से जुड़े लोगों पर 'नासिक षड्यंत्र केस' के तहत मुकदमा चलाया गया।
- 1902 में बंगाल में अनुशीलन समिति की स्थापना ज्ञानेन्द्र नाथ बसु तथा जतीन्द्र बनर्जी और बारीन्द्र नाथ घोष द्वारा की गई।
- हेमचंद्र कानूनगों पेरिस में एक रूसी से सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त कर 1908 में भारत आये और कलकत्ता स्थित मणिकतल्ला में बम बनाने हेतु कारखाना खोला।
- प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने 30 अप्रैल 1908 को बंगाल प्रेसीडेंसी के मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या कर प्रयास किया। प्रफुल्ल चाकी ने पुलिस से बचने के लिए आत्महत्या कर ली तथा खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर फाँसी दे दी।
- इस घटना के बाद पुलिस ने मणिकतल्ला पर छापा मारा वहां से 34 लोगों को गिरफ्तार किया जिसमें बारीन्द्र और अरविन्द्र घोष शामिल थे, इन सब पर अलीपुर षड्यंत्र केस के तहत मुकदमा चलाया गया। बारीन्द्र को आजीवन कारावास तथा अरविन्द्र को उचित साक्ष्य के अभाव में छोड़ दिया गया।
- बंगाल के क्रांतिकारी जतीन्द्र नाथ मुखर्जी को बाघा जतिन के नाम से जाना जाता था, जो 9 सितम्बर 1915 को बालासोर में पुलिस द्वारा मुठभेड़ में मारे गये।
- रास बिहारी बोस ने दिल्ली राजधानी परिवर्तन के समय लार्ड हार्डिंग पर बम फेकने की योजना (22 दिसम्बर 1912) बनायी। गिरफ्तारी से बचने के लिए बोस जापान चले गये। गिरफ्तार किये गये लोगों पर (अवध बिहारी, अमीर चंद्र. लाल मुकुंद, बसंत कुमार) पर दिल्ली षड्यंत्र केस' के तहत मुकदमा चलाया।
- ढाका में अनुशीलन समिति की सर्वाधिक शाखायें थी।
- सरकार ने विस्फोटक पदार्थ अधिनियम (1900) तथा समाचार पत्र अधिनियम (1908) के द्वारा क्रांतिकारी गतिविधियों को दूर करने का निर्णय लिया।
- 1922 में अचानक असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद द्वितीय चरण की क्रांतिकारी गतिविधि शुरू हूई।
- द्वितीय चरण में सान्याल की पुस्तक बंदी जीवन ने अनेक युवाओं को क्रांति के प्रति आकर्षित किया।
- 1924 में सचीन्द्र सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्र शेखर आजाद कानपुर में क्रांतिकारी संस्था 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच. आर. ए.) की स्थापना की।
- एच.आर.ए. (H.R.A.) द्वारा 9 अगस्त 1925 को उत्तर रेलवे के लखनऊ सहारनपुर संभाग के काकोरी नामक स्थान पर '8। डाउन ट्रेन' पर डकैती डालकर सरकारी खजाने का लूट लिया। यह घटना काकोरी काण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुई। सरकार

ने 29 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल असफाकउल्ला रोशन लाल, राजेन्द्र लहाडी आदि पर मुकदमा चला कर फांसी दे दी गई। काकोरी काण्ड में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के चन्द्रशेखर आजाद को छोड़कर सभी सदस्यों की गिरफ्तारी से संगठन का अस्तित्व समाप्त हो गया।

- चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में सितम्बर 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की गई।
- साइमन कमीशन के विरोध के समय लाला जी पर लाठियों से प्रहार करवाने वाला सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स (लाहौर) की 30 अक्टूबर 1928 को भगतसिंह, चन्द्र शेखर आजाद एवं राजगुरू द्वारा की गयी हत्या पहली एच. एस. आर. की गतिविधि थी।
- 1929 को केन्द्रीय विधान मण्डल में 'ट्रेड डिस्प्यूट बिल' और सेफ्टीबिल पर बहस के समय बटुकेश्वर दत्त व भगतसिंह ने बम फेंका। इसी समय भगत सिंह ने 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा दिया। इन दोनों पर 'लाहौर षड्यंत्र केस के तहत मुकदमा चला। 'इंकलाब जिन्दाबाद' नारे की रचना मुहम्मद इकबाल ने की थी।
- भूख हड़ताल पर बैठे जतिन दास की जेल में 64 दिन बाद 13 सितम्बर 1929 को मृत्यु हो गई।
- 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी दे दी गई।
- एच.एस.आर.ए (H.S.R.A) के एक मात्र सदस्य चंद्रशेखर आजाद जो काकोरी षड्यंत्र केस से ही पुलिस को चकमा देकर भाग निकले। 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में वे मारे गये।
- बंगाल में सूर्यसेन ने इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी (आई.आर.ए.) की स्थापना की। सूर्यसेन के नेतृत्व में (IRA) के सदस्यों ने चटगांव शस्त्रागार पर आक्रमण कर हथियारों पर कब्जा कर लिया। 12 जनवरी 1934 को सूर्यसेन को चटगांव कांड के कारण फांसी की सजा दे दी गयी।
- प्रीतिलता वाडेदर ने पहाड़तली (चटगांव) के रेलवे इंस्टीट्यूट पर छापा मारने के समय मारी गई।
- कल्पनादत्त सूर्यसेन के साथ 1935 में गिरफ्तार हुई उन्हें आजीवन कारावास की सजा मिली।
- फरवरी 1932 में बीना दास में दीक्षांत समारोह के दौरान उपाधि ग्रहण करते समय गवर्नर पर गोली चलायी।
- भगवती चरण बोरा ने द फिलॉस्फी ऑफ दी बॉम्ब नामक दस्तावेज जारी किया था।
- 1925 में हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की।
- अनुशीलन समिति की स्थापना पी. मित्रा ने की थी।
- बर्रा डकैती का स्थान पूर्वी बंगाल था।
- मुजफ्फपुर में किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास 1908 में किया गया। प्रफुल्ल चाकी इससे संबंधित थे।
- हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन की स्थापना 1924 में कानपुर में की गयी थी।
- अपनी फांसी से पूर्व रामप्रसाद बिस्मिल ने पीने हेतु दिए गए दूध को अस्वीकार कर दिया और कहा 'अब मैं केवल अपनी मां का दूध लूंगा'।
- सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है यह पंक्ति पं० राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखी।
- "दरो-दीवार पे हसरत की नजर करते है, खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते है" यह कथन 'वाजिद अली शाह का है।
- 'निष्क्रिय विरोध' के सिद्धांत का प्रतिपादन अरविंद घोष ने किया।

क्रांतिकारी आंदोलन की प्रमुख पुस्तक:

समाचार पत्र	सपादक
भवानी मंदिर	अरविन्द घोष
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	वी.डी. सावरकर
संध्या	मुखदा चरण
युगान्तर	वन्द्र कुमार घोष, भूपेन्द्र नाथ
वंदेमातरम्	अरविन्द घोष
भारत माता	अजीत सिंह
बंदी जीवन	शचीन्द्र नाथ सान्याल
समाचार पत्र	सपादक

भारत के बाहर क्रांतिकारी आन्दोलन

- लंदन में इंडिया होमरूल सोसाइटी की स्थापना 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने की थी।
- इंडियन होमरूल सोसाइटी ने 'इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया तथा इण्डिया हाउस की स्थापना की।
- इण्डिया हाउस के सदस्य मंदनलाल ढींगरा ने 1 जुलाई 1909 को भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार विलियम हट कर्जन वाइली की गोली मारकर हत्या कर दी। ढींगरा को फांसी की सजा दी गयी। इस हत्याकाण्ड के बाद सावरकर को गिरफ्तार कर नासिक षड्यंत्र केस के अंतर्गत मुकदमा चलाने के लिए भेजा गया।
- मैडम भीखाजी रूस्तम के आर. कामा जिन्हें (MOTHER OF INDIAN REVALUTION) भी कहा गया 1907 में स्टुटगार्ट (जर्मनी) में होने वाले 'द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस' के सम्मेलन में मैडम कामा ने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में यहां पर इन्होनें हरा, पीला, लाल, रंग के राष्ट्रीय झण्डे को फहराया। मैडम कामा पेरिस में रहते हुए क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ी रही।
- नवम्बर 1913 में सोहनसिंह भाकना ने हिन्द एसोसिएशन ऑफ अमरीका की स्थापना की। इस संस्था ने कालांतर में अंग्रेजी, उर्दू, मराठी और पंजाबी में गदर नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। गदर पत्रिका के नाम पर ही हिन्द एसोसिएशन ऑफ अमरीका का नाम गदर आन्दोलन पड़ गया।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पश्चिमी अमेरिका गदर क्रांतिकारियों का आधार स्थल था। गदर पार्टी से लाला हरदयाल 1913 में जुड़ गये।
- गदर आंदोलन के पहले सभापति सोहन सिंह भाकना थे।
- राजा महेन्द्र प्रताप ने जर्मनी के सहयोग से अफगानिस्तान के काबुल नगर में दिसम्बर 1915 को अंतरिम भारत सरकार की स्थापना की।
- मदनलाल ढींगरा तथा उधम सिंह को इंग्लैण्ड के अंग्रेज अधिकारियों की हत्या के आरोप में फांसी की सजा दे दी गयी।

बंगाल विभाजन (1905)

- लार्ड कर्जन का गर्वनर जनरल काल भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का उच्चतम बिन्दु था। इनके विभिन्न प्रशासकीय कार्यों में जिस कार्य का सर्वाधिक विरोध हुआ वह था बंगाल विभाजन।
- कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन का निर्णय (1905) में किया गया था।
- 20 जुलाई 1905 बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा हुई।
- 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हाल में सम्पन्न एक बैठक में बंगाल विभाजन के विरोध में 'स्वदेशी आंदोलन' तथा बहिष्कार प्रस्ताव पारित किया गया।
- बंगाल विभाजन के समय बंगाल का लेफ्टिनेंट गर्वनर सर एन्ड्रयूज फ्रेजर था।
- बंगाल विभाजन के विरोध में हुए आंदोलन का नेतृत्व सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने किया था।
- बंगाल में ब्रिटेन की वस्तुओं के बहिष्कार का सुझाव सर्वप्रथम कृष्ण कुमार मित्र ने दिया था।
- 1905 में ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार को राष्ट्रीय नीति के रूप मे अपनाया गया था। पहली बार पहली बार स्वदेशी और बहिष्कार को संघर्ष विधि के रूप में अपनाया गया था।
- मद्रास में स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व चिदंबरम पिल्लै ने किया था।
- दिल्ली में स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व सैय्यद हैदर रजा ने किया था।
- 'वन्दे मातरम्' भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का शीर्षक स्वदेशी आंदोलन के दौरान बना।

- ब्रिटिश पत्रकार एच.डब्लयू. नेविन्सन स्वदेशी आंदोलन से जुड़े थे।
- स्वदेशी आंदोलन के समय भारत की प्राचीन कला परंपराओ को पुनर्जीवित करने के लिए एक इंडियन सोसायटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट की स्थापना अवनींद्रनाथ टैगोर ने की।
- बंगाल विभाजन मुख्यतः बंगाली राष्ट्रवाद की वृद्धि को कमजोर करने के उद्देश्य से कर्जन करना चाहता था।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बहिष्कार की नीति का विरोध किया था।
- वर्ष 1911 में जार्ज पंचम की यात्रा के दरबार के दौरान बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा की गयी।

मुस्लिम लीग का गठन (1906):

- बंगाल विभाजन की घोषणा के बाद ही 1 अक्टूबर 1906 को आगा खाँ के नेतृत्व में मुसलमानों का एक शिष्ट मंडल तात्कालीन वायसराय लार्ड मिंटो से शिमला में मिला।
- ढाका के नवाब सलीमुल्लाह के नेतृत्व में 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में आयोजित एक बैठक में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना की घोषणा की गई।
- मुस्लिम लीग के प्रथम अध्यक्ष वकार उल मुल्क मुस्ताक हुसैन थे, नवाब सलीमुल्ला इसके संस्थापक अध्यक्ष थे।
- लीग की स्थापना का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों में निष्ठा को बढ़ाना, मुसलमानों के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करना तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति मुसलमानों में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ाना।
- लीग ने 1908 में अमृतसर अधिवेशन में पृथक् निर्वाचन मंडल की मांग की थी। जिसकी पूर्ति 1909 के मार्ले मिंटो सुधारों द्वारा की गयी। इससे पहले 1 अक्टूबर 1906 ई0 को आगा खाँ के नेतृत्व में मुसलमानों का शिष्टमंडल शिमला में लार्ड मिंटो से मिला और पृथक निर्वाचन की भांग की।
- 1908 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की लंदन शाखा की स्थापना आगा खाँ की अध्यक्षता में हुई।

मार्ले मिंटो सुधार (1909):

- 1905 ई0 में लार्ड कर्जन के स्थान पर लार्ड मिंटो को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया, तथा जॉन मार्ले को भारत सचिव नियुक्त किया गया। ब्रिटिश संसद द्वारा पारित संवैधानिक सुधार जिन्हें औपचारिक रूप से भारतीय परिषद्
- अधिनियम 1909 कहा गया, सामान्यतः मार्ले मिंटो सुधार के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 1909 ई0 के मार्ले मिंटो सुधार में मुसलममानों को पृथक् अथवा सांप्रदायिक निर्वाचन पद्धति की सुविधा प्रदान की गयी।
- 7 फरवरी 1909 को भारतीय परिषद् विधेयक ब्रिटेन के हाउस ऑफ लार्डस में रखा गया। 25 मई 1909 को विधेयक पास हुआ तथा 15 नवम्बर 1909 को राजकीय अनुमोदन के बाद मार्ले मिंटो सुधार लागू हो गया।

दिल्ली दरबार:

- दिसम्बर 1911 में ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम और महारानी मेरी के भारत आगमन पर उनके स्वागत हेतु दिल्ली में एक दरबार का आयोजन किया गया।
- दिल्ली दरबार में ही 12 दिसम्बर 1911 को सम्राट ने बंगाल विभाजन को रद्द घोषित किया तथा कलकत्ता की जगह दिल्ली को भारत की नई राजधानी बनाने की अनुमति प्रदान की।
- 1 अप्रैल 1912 को दिल्ली को कलकत्ता की जगह भारत की नई राजधानी बनाया गया।
- 'बंगाल विभाजन' के रद्द होने के बाद उड़ीसा और बिहार को बंगाल से अलग कर दिया गया। असम को पुनः 1874 की स्थिति में लाया गया, अब सिलहट भी असम का भाग था।
- 1912 में ही बिहार को अलग प्रांत का दर्जा दिया गया।

हार्डिंग बम काण्ड (1912):

- 23 दिसम्बर 1912 को कलकत्ता से दिल्ली राजधानी हस्तांतरण के समय जब वायसराय हार्डिंग अपने परिवार तथा ब्रिटेन के शाही राजवंश जुलूस के साथ दिल्ली में प्रवेश कर रहे थे तब उसी समय उन पर बम फेंका गया, जिससे हार्डिंग घायल हो गये।

प्रथम विश्व युद्ध (4 अगस्त 1914)

- प्रथम विश्व युद्ध के समय यूरोप में महाशक्तियों के दो गुट बन गये। 4 अगस्त 1914 को शुरू हुए प्रथम विश्व युद्ध में एक तरफ जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली और टर्की थे तथा दूसरी ओर फ्रांस, रूस और इंग्लैण्ड थे।

कामागाटामारू प्रकरण (1914)

- कामागाटामारू प्रकरण कनाडा में भारतीयों के प्रवेश से संबन्धित विवाद था।
- नवम्बर 1913 में कनाडा की सर्वोच्च अदालत ने ऐसे 35 भारतीयों को कनाडा में प्रवेश की अनुमति प्रदान कर दी जो सीधे भारत से कनाडा नहीं आये थे।
- 35 भारतीयों के कनाडा में प्रवेश मिलने से उत्साहित सिंगापुर के एक भारतीय मूल के व्यापारी गुरदीप सिंह ने कामागाटामारू नामक एक जहाज को किराये पर लेकर दक्षिण पूर्वी एशिया के करीब 376 यात्रियों को बैठाकर बैंकुअर की ओर प्रस्थान किया।
- कामागाटामारू जहाज के बैंकुअर पहुँचने के पूर्व ही कनाडा सरकार ने पुनः प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया, बैंकुअर तट पर पहुँचे यात्री पुलिस की घेराबंदी के काण जहाज से नीचे नही उतर सकें।
- कनाडा सरकार के सख्त रवैये के कारण, जहाज को बैंकुअर सीमा से हटना पड़ा, उस समय युद्ध छिड़ गया।
- कामागाटामारू जहाज के बजबज (कलकत्ता) पहुँचने पर कुछ यात्रियों और पुलिस में संघर्ष हुआ जिसमें करीब 18 यात्री मारे गये व 202 यात्रियों को जेल में डाला गया।

लखनऊ पैक्ट (1916):

- 1916 में लखनऊ में हुए कांग्रेस सम्मेलन की अध्यक्षता अम्बिकाचरण मजूमदार ने की थी।
- लखनऊ अधिवेशन (1916) की दो महत्वपूर्ण घटनायें थी, उग्रवादियों को जिन्हें पिछले नौ वर्ष से कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया था। एक बार फिर कांग्रेस में पुर्न प्रवेश तथा कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के मध्य ऐतिहासिक लखनऊ समझौता हुआ।
- उदारवादियों और उग्रवादियों के पुनर्मिलन की प्रक्रिया का श्रेय एनी बेसेंट का था।
- वर्ष 1916 में मुस्लिम लीग और कांग्रेस के मध्य समझौते की पृष्ठभूमि बाल गंगाधर तिलक ने कराया था।
- कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य का यह संयुक्त काल 1916 - से 1922 तक चलता रहा।
- लखनऊ समझौते के अन्तर्गत मुस्लिम लीग की पृथक् निर्वाचन क्षेत्र की मांग को स्वीकार कर लिया गया।

होमरूल लीग आंदोलन

- होमरूल लीग आंदोलन सर्वप्रथम एनी बेसेंट ने आरम्भ किया। 2 जनवरी 1914 को अपने पत्र कॉमनवील में एनी बेसेन्ट ने स्वशासन की व्याख्या की।
- होमरूल आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक नए चरण के आरंभ का द्योतक था क्योंकि इसने देश के सामने स्वशासन की एक ठोस योजना रखी।
- बाल गंगाधर तिलक द्वारा 28 अप्रैल 1916 को बेलगांव (पूना) में होमरूल लीग की स्थापना की गई। तिलक के पाँच महीने बाद एनी बेसेन्ट ने सितम्बर 1916 में होमरूल लीग की स्थापना की।
- लीग की सर्वाधिक शाखायें मद्रास में थी लेकिन लीग की सक्रियता सर्वाधिक बम्बइ ',उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से तथा गुजरात के ग्रामीण क्षेत्रों में थी।
- एनी बेसेन्ट अपने पत्र कामनवील और न्यू इण्डिया द्वारा तथा तिलक ने मराठा एवं केसरी के माध्यम से लीग के कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किया।

मांटेग्यू घोषणा (1917):

- मांटेग्यू घोषणा को उदारवादियों ने भारत के मैग्नाकार्टा' की संज्ञा दी।
- मांटेग्यू घोषणा और मांटेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट के आधार पर निर्मित भारत सरकार अधिनियम 1919 को उत्तरदायी सरकार की स्थापना के लिये बड़ा कदम माना गया।

1919 का भारत सरकार अधिनियम

- इस एक्ट में 'उत्तरदायी शासन' शब्द का स्पष्ट प्रयोग किया गया था।
- प्रान्तों में आंशिक उत्तरदायी शासन तथा द्वैध शासन की स्थापना की गयी।
- 1793 ई0 में भारत राज्य सचिव को भारतीय राजस्व से वेतन मिलना तय किया गया था, इस अधिनियम के द्वारा अब वह अंग्रेजी राजा से मिलना तय किया गया।
- इस अधिनियम में सभी विषयों की केन्द्र तथा प्रान्तों में बांट दिया गया।
- सभी अवशेष शक्तियां केन्द्रीय सरकार के पास थी।

गांधी युग

- मोहन दास करमचंद गांधी (1869-1948ई0) - महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। करमचंद गांधी पोरबंदर, राजकोट एवं बीकानेर के दीवान थे।
- महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वर्ष 1915 में लौटे।
- महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में 21 वर्ष तक रहे।
- दक्षिण अफ्रीका के पीटरमारित्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर गांधी जी को ट्रेन से फेंका गया।
- महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में इण्डियन ओपिनियन नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।
- गांधी जी दार्शनिक अराजकतावाद के समर्थक थे।
- गांधी जी रामराज्य के लिए सत्य तथा अहिंसा को मानते थे। गांधी की सत्याग्रहा रणनीति में सबसे अंतिम स्थान हड़ताल को दिया गया। गांधीजी के अनुसार हिंसा का क्रूरतम रूप गरीबी का स्थायित्व रूप है।
- गांधी जी ने फीनिक्स फार्म की स्थापना डरबन (द. अफ्रीका) में की थी। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में सेवाधर्म अपनाया।
- गांधी जी के अनुसार, अहिंसा का अर्थ सत्य की प्राप्ति का रास्ता है।
- गांधी जी ने परिवार नियंत्रण के लिये आत्मनियंत्रण तरीका बताया।
- गांधी जी ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन 1901 में सर्वप्रथम भाग लिया।
- महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले थे। गोखले ने गांधी को कहा प्रथम वर्ष 'खुले कान पर बंद मुंह करके व्यतीत करें।
- महात्मा गांधी के अनुसार, राजनीतिक का तात्पर्य जनकल्याण के लिए सक्रियता था।
- भारत में स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान सबसे पहले सत्याग्रह महात्मा गांधी ने किया था।
- गांधी ने अहमदाबाद के निकट साबरमती के किनारें एक आश्रम अहमदाबाद नगर के बाहर स्थापित किया।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये निष्क्रिय विरोध करने के लिए गांधी जाने जाते है।
- ब्रिटिश निर्मित उत्पादों का गांधी का बहिष्कार प्रभावी हुआ क्योंकि ब्रिटेन भारत को एक बड़ा निर्मित वस्तुओं का बाजार समझता था।
- गांधीवादी विचारधारा से रस्किन, थोरो एवं टॉलस्टाय के विचारों से प्रभावित थे।
- गांधी जी रस्किन की पुस्तक अनटू दिस लास्ट से प्रभावित हुए थे। इस पुस्तक के कथन 'व्यक्ति का कल्याण सब के कल्याण में निहित है।
- महात्मा गांधी का भारत में पहला आंदोलन चंपारन सत्याग्रह था।

चंपारण सत्याग्रह:

- 1917 में बिहार के चम्पारन में गांधी ने अपना पहला आंदोलन चलाया।
- राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर गांधी जी वहां गए। उन्होनें वहां तीन कठिया पद्धति के विरूद्ध आंदोलन छेड़ा। राजेंद्र प्रसाद, अनुग्रह नाराण सिन्हा, जे. बी. कृपलानी आन्दोलन से जुड़े थे।
- तीन कठिया पद्धति में उस क्षेत्र के प्रत्येक किसान में यह अपेक्षा की जाती थी कि वह 3 / 20 भूभाग पर नील की खेती करें।
- गांधी जी ने किसानों को अलाभकर तीन कठिया पद्धति से उस क्षेत्र के किसानों को बचाने के लिये आंदोलन चलाया।
- यह आंदोलन सफल रहा। इसी आंदोलन के बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गांधी जी को महात्मा कहा।

अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन (1918):

- 1918 में गांधी जी ने अहमदाबाद के मिल मजदूरों के पक्ष में आंदोलन छेड़ा। यहां पर मिल मालिकों तथा मजदूरों में प्लेग बोनस के लेकर विवाद छेड़ा था। प्लेग खत्म होने के पश्चात् मालिक उसे समाप्त करना चाहते थे। गांधी जी ने आंदोलन के बाद 35% बोनस मिल मजदूरों को देने का आदेश दिया।

खेड़ा सत्याग्रह (1918):

- 1918 ई0 में गांधी जी ने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों के पक्ष में आंदोलन छेड़ा। वस्तुतः खेड़ा जिले में फसल नष्ट हो गई थीं। किंतु भू-राजस्व में कमी नहीं की गई थी। सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसाइटी के सदस्यों विट्ठल भाई पटेल तथा गांधी जी ने पूरी जांच पड़ताल के बाद पाया कि किसानों की मांग जायज है और राजस्व संहिता के लगान माफ किया जाये, आंदोलन सफल रहा।

रॉलेट एक्ट (1919):

- बढ़ रही क्रांतिकारी गतिविधियों को कुचलने के लिए 1917 में न्यायधीश सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक समिति को नियुक्त किया गया।
- समिति के सुझाव पर 17 मार्च 1919 को केन्द्रीय विधान परिषद् से रॉलेट एक्ट पास हुआ।
- एक्ट के अनुसार, अंग्रेजी सरकार जिसकों चाहे जब तक चाह, बिना मुकदमा चलाये जेल में बंद रख सकती थी, इसीलिए इस कानून को बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील का कानून कहा गया।
- रॉलेट एक्ट की भारतीय जनता ने 'काला कानून' कहकर आलोचना की।
- कानून के विरोध में गांधी जी ने 9 अप्रैल 1919 को देश भर में हड़तालों का आयोजन किया।
- 9 अप्रैल को गांधी जी दिल्ली में गिरफ्तारी के बाद बम्बई में ले जाकर छोड़ दिया गया है।

जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919):

- पंजाब में लोकप्रिय नेता डॉ० किचलू और डा० सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध प्रदर्शन हेतु 10 अप्रैल को निकाले गये शांतिपूर्ण जुलूस पर पुलिस ने गोली चलायी।
- 13 अप्रैल 1919 को (बैशाखी के दिन) अमृतसर जलियाँबाग में गोलीकाण्ड और नेताओं (किचलू और सत्यपाल) की गिरफ्तारी के विरूद्ध एक सभा का आयोजन किया गया था। सभास्थल चारों ओर से उंची-उंची दीवारों से घिरा था।
- सभा स्थल पर अंग्रेज जनरल ओ डायर ने बिना कोई पूर्व सूचना या चेतावनी के भीड़ पर गोली चलवा दी जिसमें करीब 1000 लोग मारे गये। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार, 379 व्यक्ति मारे गये और 1200 घायल हुए।
- हत्याकाण्ड के विरोध में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 'नाइट' की उपाधि वापस कर दी, वायसराय की कार्यकारिकी के सदस्य शंकर नायर ने त्याग पत्र दे दिया।
- सरकार के जलियांबाग हत्याकांड के जांच के लिए हंटर कमीशन का गठन किया।
- कांग्रेस ने इसकी जांच हेतु मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की गई। समिति के अन्य सदस्य मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, सी.आर. दास, तैय्यबजी और जयकर आदि।

खिलाफत आंदोलन

- प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की मित्र राष्ट्रों के साथ युद्ध में शामिल था। 1918 में युद्ध समाप्ति के बाद तुर्की के खलीफा के साथ उचित व्यवहार न हो पाने के कारण व तुर्की साम्राज्य के विभाजन के विरूद्ध भारत में खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ।
- गांधी जी ने खिलाफत को हिन्दू मुस्लिम एकता का एक सुनहरा अवसर माना।
- 17 अक्टूबर 1919 को अखिल भातीय स्तर पर खिलाफत दिवस मनाया गया, सितम्बर 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन किया गया। 24 नवम्बर 1919 को होने वाले खिलाफत कमेटी को सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गांधी को प्रदान की।

- खिलाफत के साथ असहयोग आंदोलन चलाया गया।

असहयोग आंदोलन (1920-22):

- कलकत्ता में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन 1920 में पास हुए असहयोग आंदोलन सम्बन्धी प्रस्ताव का दिसम्बर 1920 में नागपुर में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में पुष्टि कर दी गई। इस अधिवेशन में असहयोग के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गई।
- असहयोग के शुरूआत के समय ही कांग्रेस को तिलक की मृत्यु का एक बड़ा सदमा झेलना पड़ा।
- 1 अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन शुरू हुआ।
- आंदोलन के समय स्कूल, कॉलेजों, विदेशी कपड़ों, पदों इत्यादि का बहिष्कार शामिल था।
- आंदोलन के समय गोरखपुर जिले में स्थित चौरी-चौरा नामक स्थान पर 5 फरवरी 1922 को आंदोलन की भीड़ ने पुलिस के 22 जवानों को जला दिया।
- हिंसा से आहत गांधी जी ने 12 फरवरी 1922 को बारदोली में हुए बैठक में असहयोग आंदोलन समाप्त करने का निर्णय लिया।

स्वराज्य पार्टी का गठन (1923):

- 1919 के भारतीय शासन अधिनियम द्वारा स्थापित केन्द्रीय तथा प्रांतीय विधान मण्डलों का कांग्रेस गांधी जी के निर्देशानुसार बहिष्कार किया था और 1920 में चुनाव में हिस्सा नहीं लिया था।
- असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद कांग्रेस के चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने 1919 के एक्ट द्वारा घोषित विधान परिषदों के चुनाव में भाग लेकर सभाओं में प्रवेश कर असहयोग की बात रखी ये लोग परिवर्तनवादी कहलाए।
- डा० राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालचारी, वल्लभ भाई पटेल, डॉ अंसारी, एन. जी. रंगा, आयंगर आदि ने परिषद में प्रवेश करने की नीति का विरोध किया, ये लोग अपरिवर्तनवादी कहलाए।
- दिसम्बर 1922 ई0 में गया में कांग्रेस अधिवेशन में कॉउंसिल में प्रवेश न लेने का प्रस्ताव पारित हुआ। फलस्वरूप चितरंजन दास ने त्यागपत्र दे दिया।
- मार्च 1923 ई0 में चितरंजन दास व मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद में स्वराज पार्टी की स्थापना की। इसके अध्यक्ष सी. आर.दस तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू हुए।
- सितम्बर 1923 ई० में मौलाना आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया इसमें कांग्रेस ने विधानमण्डलों में प्रवेश के कार्यक्रमों को स्वीकार कर लिया।
- नवम्बर 1923 ई0 के चुनावों चुनावों में स्वराज पार्टी को काफी सफलता मिली। सेन्ट्रल असेम्बली की 101 निर्वाचित सीटों में से 42 सीटों पर इनकी जीत हुई। मध्य प्रान्त में उन्हें स्पष्ट बहुमत मिला। बंगाल में ये सबसे बड़े दल के रूप में उभरे तथा उ0प्र0 में भी इन्हें अच्छी सफलता मिली।
- स्वराजवादियों की माँगों के परिणामस्वरूप 1924 ई0 में सरकार ने 1919 ई0 के अधिनियम की समीक्षा के लिए मुण्डीमैन कमेटी की नियुक्ति की।
- 1925 ई0 में विट्ठल भाई पटेल को सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली का अध्यक्ष बनाया गया।
- 1925 ई0 में मोतीलाल नेहरू स्क्रीन कमेटी के सदस्य बने जो सेना के तीव्र भारतीयकरण के लिये था।
- 1925 ई0 में चितरंजन दास की मृत्यु के बाद स्वराज दल कमजोर पड़ गया।
- सी.आर. दास देशबंधु के नाम से प्रसिद्ध हैं।

गाँधी-दास पैक्ट (नवम्बर 1924 ई0):

- 1924 ई0 में गांधी जी, सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू एक संयुक्त वक्तव्य दिया जो गाँधी दास पैक्ट कहलाया।
- इसमें कहा गया असहयोग अब राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं रहेगा। स्वराज पार्टी को अधिकार दिया गया कि कांग्रेस नाम व अभिन्न अंग के रूप में विधान सभाओं के अन्दर कार्य करने का अधिकार दिया गया।

- गांधी जी के जिम्मे 'आल इण्डिया स्पिनर्स एसोसिएशन' को - संगठित करने व सम्पूर्ण देश में चरखे करघे के प्रचार का कार्य सौंपा गया।
- पैक्ट की मुख्य बातों की पुष्टि बेलगाँव अधिवेशन 1924 ई0 - में की गई।

साइमन कमीशन (1927)

- 1927 ई0 में साइमन आयोग की नियुक्ति की गई।
- 1919 के भारत शासन अधिनियम में प्रावधान था, की एक्ट पारित होने के 10 वर्ष बाद अधिनियम की व्यवहारिकता की जाँच का प्रावधान था। इसी सन्दर्भ में साइमन कमीशन का गठन हुआ।
- सर जान साइमन कमीशन की अध्यक्षता में गठित साइमन आयोग में कुल 7 सदस्य, सभी अंग्रेज थे, जिसके कारण कांग्रेस सहित विविध दलों ने इसका विरोध किया।
- 3 फरवरी 1928 को साइमन आयोग बम्बई पहुँचा उस दिन पूरी बम्बई में हड़ताल का आयोजन कर काले झण्डे के साथ 'साइमन वापस जाओं' के नारे लगाये गये।
- लाहौर में आयोग का विरोध कर रहे लाला लाजपत राय को पुलिस ने ऐसे पीटा की कुछ दिन बाद लाला जी की मृत्यु हो गई। मरने से पूर्व लाजपत राय ने कहा था कि 'मेरे ऊपर लाठियों से प्रहार किये गये है, वही एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत (शवपेटी) की आखिरी कील साबित होगा।
- 1928-28 के बीच कमीशन ने भारत की दो बार यात्रा की आयोग ने मई 1930 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी, जिस पर लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलनों में विचार होना था।

नेहरू रिपोर्ट (1928)

- साइमन कमीशन की नियुक्ति के समय लार्ड बर्केन हैड ने भारतीयों के समक्ष एक चुनौती रखी कि वे एक ऐसा संविधान बनाकर तैयार करे जो सामान्यतः सभी लोगों को मान्य हो।
- चुनौती स्वीकार करते हुए फरवरी 1928 में दिल्ली में सर्वदलीय सम्मेलन में करीब 29 दलों ने हिस्सा लिया था। एक प्रस्ताव पारित कर पूर्ण उत्तरदायी सरकार की व्यवस्था का प्रावधान किया गया।
- मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में स्थापित समिति के अन्य सदस्य सर तेज बहादुर सप्रु. सुभाष चंद्र बोस, एम. एस. सरदार, मंगल सिंह, अली इमाम, जी आर प्रधान, कुरैशी आदि थे।
- मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता वाली समिति ने 28 अगस्त 1928 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना गया।

नेहरू रिपोर्ट कुछ सिफारिशें:

- भारत को डोमेनियन स्टेट (अधिराज्य) का दर्जा प्राप्त हो।
- भारत में एक संघ होगा।
- गर्वनर जनरल की स्थिति संवैधानिक मुखिया मात्र रहेगा।
- साम्प्रदायिक आधार पर पृथक् निर्वाचक मण्डल की मांग अस्वीकार कर दी गई।
- इस रिपोर्ट में साम्प्रदायिक निर्वाचन को अस्वीकार करने के कारण जिन्ना का चौदह सूत्री फार्मूला लीग ने प्रस्तुत किया।

जिन्ना का चौदह सूत्री फार्मूला:

- नेहरू रिपोर्ट के प्रतिशोध में जिन्ना ने अपनी 14 मांगों की सूची जारी की जो इस प्रकार है।
- मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन की सुविधा केन्द्रीय प्रान्तीय मंत्रिमंडलों में मुसलमानों के लिए 1/3 प्रतिनिधित्व।
- मुस्लिम बहुमत वाले प्रांतों का पुनर्गठन इत्यादि।

कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929)

- कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन 1928 में दी गई एक वर्ष की समय सीमा (डोमेनियन स्टेट के संदर्भ में) समाप्त हो जाने के बाद 31 दिसम्बर 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन का आयोजन किया गया।
- ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता प० जवाहर लाल नेहरू ने की। सम्मेलन में नेहरू रिपोर्ट को पूरी तरह निरस्त घोषित किया गया।
- लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का लक्ष्य पारित किया गया।
- सम्मेलन में 1929 की आधी रात्रि को रावी नदी के तट पर कांग्रेस के अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय स्वतंत्रता की प्रतीक 'तिरंगा झण्डा' पूर्ण स्वराज्य, वंदेमातरम् तथा इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों के बीच फहराया गया।
- कांग्रेस कार्य समिति द्वारा 2 जनवरी 1930 को अपनी बैठक में यह निर्णय किया गया कि 26 जनवरी 1930 का दिन 'पूर्ण स्वराज्य दिवस' के रूप में मनाया जायेगा तथा 26 जनवरी को प्रत्येक वर्ष पूर्ण स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।
- 26 जनवरी 1930 को आधुनिक भारत के इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सविनय अवज्ञा आन्दोलनः

- लाहौर अधिवेशन 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस कार्यकारिणी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने का अधिकार दिया गया।
- फरवरी 1930 को साबरमती आश्रम में हुई कांग्रेस कार्यकारिणी की दूसरी बैठक में महात्मा गांधी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने का दायित्व दिया गया।
- गाँधी जी ने आंदोलन टालने के लिए 'यंग इण्डिया' के माध्यम से लार्ड इरविन के सम्मुख 11 मांगे रखी। 11 मांगे न माने जाने के बाद सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ किया गया।
- महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को सविनय अवज्ञा के तहत सत्याग्रह को शुरू किया।
- गांधी जी ने साबरमती आश्रम से 12 मार्च 1930 को अपने 78 अनुयायियों के साथ 'दांडी मार्च' किया। 24 दिन की लंबी यात्रा के बाद 5 अप्रैल 1930 को दांडी में गांधी जी ने सांकेतिक रूप से कानून को तोड़ा। यही से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत हुई।
- आंदोलन के तहत-नमक कानून तथा ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन, कानूनी अदालतों, सरकारी विद्यालयों , महाविद्यालयों एंव सरकारी समारोहों का बहिष्कार भू-राजस्व लगान तथा अन्य करों की अदायगी पर रोक, शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन, सरकारी नौकरियों से त्याग पत्र इत्यादि कार्यक्रम शामिल थे।
- गुजरात प्रांत के सत्याग्रहियों की संख्या महात्मा गांधी के दांडी कूच में सर्वाधिक थी।
- सविनय अवज्ञा के समय गांधी जी ने विदेशी पत्रकार वेब मिलर को आश्रम में ठहराया था।
- अप्रैल 1930 में नमक कानून तोड़ने के लिए तंजौर तट पर एक अभियान को सी. राजगोपालाचारी ने संगठित किया था।
- नमक सत्याग्रह के दौरान बिहार के लोगों ने नमक के साथ चौकीदारी कर का विरोध किया।
- लालकुर्ती आंदोलन खान अब्दुल गफ्फार खां ने शुरू किया था इसी समय इन्होंने पठान क्षेत्रीय राष्ट्रवादी एकता और उपनिवेशवाद के विरूद्ध संघर्ष किया।
- वर्ष 1930 में अंग्रेज सरकार के विरूद्ध प्रसिद्ध पेशावर कांड का नायक वीर चंद्रसिंह गढ़वाली था।
- इसी समय मणिपुर में जियातरंग आंदोलन प्रारंभ हुआ।
- बेगूसराय के चौकीदारी टैक्स के विरूद्ध आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन का एक हिस्सा था।
- सविनय अवज्ञा के समय गढ़वाल रेजीमेंट के सैनिकों ने प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया था।
- नागा महिला गाडिनेल्यू ने भी अपने नागा साथियों के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन को पूरा समर्थन दिया। जवाहरलाल नेहरू ने गाडिनेल्यू को 'रानी की उपाधि से सम्मानित किया।
- सरकार ने दमनचक्र चलाते हुए जून 1930 को कांग्रेस और सम्बद्ध संगठन को गैर कानूनी घोषित कर दिया। जवाहर लाल नेहरू और गांधी को गिरफ्तार करके गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।

- सविनय अवज्ञा के समय ही बच्चों की 'वानरसेना' तथा लड़कियों की 'माजेरी सेना का गठन किया गया।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

- 12 नवम्बर 1930 से 13 जनवरी 1931 तक लंदन में आयोजित किया गया। यह ऐसी पहली वार्ता थी जिसमें ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को बराबरी का दर्जा दिया।
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन जिसमें 89 सदस्यों में 13 ब्रिटिश राजनीतिक दलों के शेष 76 भारतीय उदारवादी दल मुस्लिमलीग, हिन्दू महासभा, दलितवर्ग व्यापारी वर्ग तथा राजवाड़ों के प्रतिनिधि थे।
- सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटेन के सम्राट जार्ज पंचम ने किया तथा अध्यक्षता प्रधानमंत्री रैम्जे मैक्डोनाल्ड ने की।
- तेजबहादुर सप्रू, श्री निवासशास्त्री, मुहम्मद अली, मुहम्मद शफी, आगा खां, फजलुल हक, मुहम्मद अली जिन्ना, होमी मोदी, एम.आर. जयकर, मुंजे, भीमराव अम्बेडकर, सुन्दर सिंह मंजीतिया आदि शामिल थे।
- जनवरी 1931 ई0 में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने कहा कि कांग्रेस गोलमेज सम्मेलन की कार्यवाहियों को मान्यता देने को तैयार नहीं है क्योंकि इसमें भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व नहीं है। इरविन 26 जनवरी 1931 ई0 को गाँधी जी को रिहा कर दिया गया है। तेज बहादुर सप्रू एवं जयकर के प्रयत्नों से गांधी-इरविन के मध्य 5 मार्च 1931 को समझौता हुआ जिसे गांधी-इरविन पैक्ट कहा गया।

गांधी इरविन समझौता (1931):

5 मार्च 1931 ई0 में दिल्ली में गांधी इरविन पैक्ट हुआ जिसे 'दिल्ली पैक्ट' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें कुछ प्रावधान इस प्रकार है -

- गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन समाप्त करने के लिए तैयार हो गई।
- कांग्रेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए तैयार हो गई।
- सभी राजनीतिक बंदियों, जिनके विरूद्ध हिंसा का आरोप नहीं था को रिहा करने पर सहमति बनी।
- विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर शांतिपूर्ण धरना देने का अधिकार दिया गया।
- समुद्र तटीय प्रदेशों में बिना नमक कर दिये नमक बनाने की अनुमति दी गयी।
- सरोजनी नायडू ने इरविन और गांधी को 'दो महात्मा' कहा था।
- गांधी-इरविन समझौते में महात्मा गांधी के लाभ को ऐलन कैम्पबेल 'जॉनसन' ने सांत्वना पुरस्कार कहा था।
- देश के युवाओं द्वारा समझौते की आलोचना की गयी क्योंकि भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव की रिहाई के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया था।

कांग्रेस का करांची अधिवेशन (1931):

- गांधी इरविन समझौते को 26 से 29 मार्च 1931 तक चलने वाले करांची कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अनुमोदन कर दिया गया।
- जिस समय करांची अधिवेशन चल रहा था उसी समय भगत सिंह, सुखदेव एवं राजगुरू को 23 मार्च 1931 को लाहौर में फाँसी पर लटका दिया गया।
- करांची कांग्रेस का विशेष अधिवेशन था जिसकी अध्यक्षता वल्लभ भाई पटेल ने की थी।
- इसी अधिवेशन में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मूल अधिकारों तथा आर्थिक कार्यक्रमों की घोषणा की।
- सुभाष चंद्र बोस ने माना कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931) को महात्मा गांधी की लोकप्रियता और सम्मान पराकाष्ठा पर पहुँच गयी।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितम्बर 1931 ई0 से 1 दिसम्बर 1931 तक)

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1931 ई0 सेंट जेम्स पैलेस (लंदन) में हुआ था।
- अनुदारवादी नेता सेमुअल हॉक को भारत मंत्री एवं लार्ड वेलिंगटन को भारत का वायसराय बनाया गया।
- गांधी जी एस. एस. राजपूताना नामक जहाज से 12 सितम्बर को इंग्लैण्ड पहुँचे, वे कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि थे। गांधी जी किंग्सले हॉल में ठहरे।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कुल 31 प्रतिनिधि थे।
- सरोजनी नायडू और मदनमोहन मालवीय तथा एनी बेसेन्ट ने खुद के खर्च पर सम्मेलन में भाग लिया था।
- इसी सम्मेलन के समय फ्रेंकमोरेस नामक ब्रिटिश नागरिक का गांधी जी के बारे में कथन कि 'अर्ध नंगे फकीर' के ब्रिटिश प्रधानमंत्री से वार्ता हेतु 'सेण्टपाल पैलेस' की सीढ़ियां चढ़ने का दृश्य अनोखा और दिव्य प्रभाव उत्पन्न कर रहा था।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन साम्प्रदायिक समस्या विवाद के कारण पूरी तरह असफल रहा। दलित नेता भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के लिए पृथक् निर्वाचन मण्डल की सुविधा की मांग की जिसे गांधी जी ने अस्वीकार कर दिया।

द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन (1932-34)

- 1 जनवरी 1932 को कांग्रेस कार्यसमिति ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को दोबारा शुरू करने का निर्णय लिया।
- आंदोलन शुरू होने के शीघ्र बाद चोटी के नेता गांधी नेहरू, खान अब्दुल गफ्फार खां आदि को गिरफ्तार करके सरकार ने जेल में डाल दिया।
- सरकार ने आपात कालीन शक्तियों से संबंधित अध्यादेश सरकार द्वारा निकाले गये।
- जिस समय आंदोलन चरम पर था उसी समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने अपना प्रसिद्ध साम्प्रदायिक पंचाट (अधिनिर्णय) की घोषणा कर आंदोलन की दिशा बदल दी।

साम्प्रदायिक पंचाट और पूना समझौता (1932)

- 16 अगस्त 1932 को विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधित्व के विषय पर एक पंचाट जारी किया जिसे साम्प्रदायिक पंचाट कहा गया।
- इस पंचाट में पृथक निर्वाचन पद्धति को न केवल मुसलमानों के लिए बल्कि दलितवर्गो पर भी लागू कर दिया गया।
- प्रांतीय विधान मण्डलों में मुसलमानों, इसाइयो, सिखों, आंग्ल भारतीयों तथा महिलाओं के लिये पृथक् निर्वाचन की व्यवस्था थी।
- दलित वर्ग को पृथक् निर्वाचक मण्डल की सुविधा के विरोध में 20 सितम्बर 1932 को गांधी जी ने जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया।
- मदनमोहन मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद, पुरूषोत्तम दास सी. राजगोपालचारी आदि के प्रयत्नों से गांधी के उपवास के 5वें दिन बाद 26 सितम्बर 1932 को गांधी जी और अम्बेडकर के बीच पूना समझौता हुआ।
- पूना पैक्ट में दलितों के लिए पृथक निर्वाचन समाप्त कर दिया गया। विभिन्न प्रांतीय विधान मण्डलों में दलित वर्ग के 148 सीटें आरक्षित की गई। दूसरे केन्द्रीय विधान मण्डल में 18% सीटें दलित वर्ग के लिए आरक्षित की गई।
- अम्बेडकर, मदन मोहन मालवीय, सी राजगोपालचारी ने 1932 के ऐतिहासिक पूना समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। -
- 1932 में पूना पैक्ट के बाद अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना गांधी जी ने की थी, जिसके प्रथम अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला थे।
- दलित वर्गों के संघ की स्थापना डॉ० बी.आर. अम्बेडकर द्वारा किया गया था।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 नवम्बर 1932-24 दिसम्बर 1932):

- लन्दन में 1932 को तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुआ।
- 46 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, अम्बेडकर ने भाग लिया था।

- 24 दिसम्बर 1932 ई० को सम्मेलन की समाप्ति के बाद एक श्वेत पत्र जारी किया गया था। श्वेत पत्र पर विचार करने के लिए लिनलिथगों की अध्यक्षता में संयुक्त समिति गठित की गयी। जिसने 22 नवम्बर 1934 ई0 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी। संयुक्त समिति के रिपोर्ट के आधार पर 19 दिसम्बर 1934 ई0 प्रस्तुत किया गया। 3 अगस्त 1935 ई0 को ब्रिटिश सम्राट ने उसे अपनी सहमति दे दी। यह विधेयक 'भारत शासन अधिनियम 1935 के नाम से विख्यात हुआ।

भारत शासन अधिनियम (1935):

- 1935 के अधिनियम में सर्वप्रथम भारत में संघात्मक सरकार की स्थापना की गयी।
- इस अधिनियम में प्रान्तों में द्वैध शासन समाप्त करके केन्द्र में द्वैध शासन लागू किया गया।
- हस्तान्तरित व आरक्षित विषयों का प्रावधान किया गया।
- इसके तहत 1937 में विधान सभा चुनाव हुए।

कांग्रेस समाजवादी पार्टी (1934):

- 1934 ई0 में कांग्रेस के भीतर समाजवादी विचारों के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण आचार्य नरेन्द्रदेव, जय प्रकाश नारायण और अच्युत पटवर्धन ने कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना की।
- आचार्य नरेंद्र देव समाजावादी दल के प्रमुख नेता थे।
- वर्ष 1934 में पटना में अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी पार्टी के संयोजक जयप्रकाश नारायण थे।
- 1934 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन जयप्रकाश नारायण एवं आचार्य नरेन्द्र देव के द्वारा किया गया था।
- जयप्रकाश नारायण को लोकनायक के नाम से जाना जाता है।
- श्री नरसिंह नारायण समाजवादी थे।
- जयप्रकाश नारायण बिहार सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक थे।

प्रांतीय चुनाव और मंत्रिमण्डल का गठन (1937):

- 1935 ई0 के भारत शासन अधिनियम के आधार पर 1937 ई० चुनाव हुए कांग्रेस की बड़ी सफलता मिली।
- ग्यारह में से पाँच (5) प्रांतों मद्रास, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रांत और संयुक्त प्रांत में पूर्ण बहुमत (175 में से 86) मिला।
- 1937 के चुनाव में कांग्रेस को पंजाब में पूर्ण बहुमत नहीं मिला।
- वर्ष 1937 में बिहार, मद्रास और उड़ीसा में आम चुनाव के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी सरकार बनाई।
- संयुक्त प्रांत के प्रधानमंत्री गोविंद बल्लभ पंत और बम्बई मे बी0जी0खरे प्रधानमंत्री बने।
- वर्ष 1937 के चुनाव के पश्चात् यू०पी० में गठित मंत्रिमण्डल में वित्त मंत्रालय रफी अहमद किदवई को सौंपा गया।
- कांग्रेस ने कार्यकारिणी कमेटी 1937 में भू-स्वामित्व को समाप्त करने की नीति अपनाई गयी।
- कांग्रेस प्रशासित प्रदेशों में मुस्लिमों की शिकायतों से संबंधित रिपोर्ट का सही क्रम –
- पीरपुर रिपोर्ट, शरीफ रिपोर्ट मुस्लिम सफरिंग्स अंडर कांग्रेस रूल
- 1939 ई0 में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने पर तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने भारतीय विधान मण्डलों की सहमति के बिना युद्ध में शामिल होना घोषित कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय विंस्टन चर्चिल ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे।
- कांग्रेस की सहमति के बिना उन्हें युद्ध रत घोषित करने के कारण 22 अक्टूबर 1933 ई0 को कांग्रेस कार्यसमिति ने एक मंत्रिमण्डल को इस्तीफा देने को कहा। कांग्रेस कार्यकारिणी के आदेश पर 29-30 अक्टूबर 1939 ई0 को 8 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमण्डलों ने इस्तीफा दे दिया।
- कांग्रेस के इस्तीफे के बाद 22 दिसम्बर 1939 ई0 को 'मुक्ति दिवस' एवं 'धन्यवाद' दिवस मनाया।

अगस्त प्रस्ताव:

- कांग्रेस मंत्रिमण्डलों के त्यागपत्र के बाद कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन मार्च 1940 ई0 में रामगढ़ (बिहार) में आयोजित हुआ। जिसमें कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से इस शर्त पर सहयोग करने का प्रस्ताव रखा कि केन्द्र में अंतरिम राष्ट्रीय सरकार गठित की जाए।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव पर लार्ड लिनलिथगों ने युद्ध के समय सहयोग प्राप्त करने के लिए उसके समक्ष प्रस्ताव रखा जिसे सामान्यतः 'अगस्त प्रस्ताव' के नाम से जाना जाता है। जिसमें प्रस्ताव था-
- युद्ध के बाद प्रतिनिधि मूलक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जाएगा।
- वायसराय कार्यकारिणी परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ा दी जाएगी।
- एक युद्ध सलाहकार परिषद् गठित की जाएगी।
- भारत का शासन ऐसे समुदाय को नहीं सौंपा जाएगा जिसका विरोध भारत के कई शक्तिशाली वर्ग कर रहे हो।
- कांग्रेस ने प्रस्ताव का विरोध किया। जवाहर लाल नेहरू के अनुसार 'यह दरवाजे में जड़ी जंग लगी कील की तरह है।

व्यक्तिगत सत्याग्रह (17 अक्टूबर 1940 ई0):

- कांग्रेस ने अगस्त प्रस्ताव के विरोध में तथा युद्ध से स्वय को अलग सिद्ध करने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर 1940 ई0 में पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) में शुरू किया गया, विनोबा भावे पहले सत्याग्राही थे।
- 17 दिसम्बर 1940 ई0 को यह सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया। जवाहर लाल नेहरू दूसरे सत्याग्राही थे।
- 5 जनवरी 1941 ई0 को जवाहरलाल नेहरू ने पुनः इसे प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन में 20,000 से अधिक सत्याग्राहियों को गिरफ्तार किया गया।
- इस आंदोलन को 'दिल्ली चलो' आन्दोलन भी कहा गया।

पाकिस्तान की मांग (1940 ई0):

- 23 मार्च 1940 ई0 को मुस्लिम लीग का अधिवेशन लाहौर में हुआ जिसकी अध्यक्षता मुहम्मद अली जिन्ना ने की।
- इस अधिवेशन में अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की मांग की गई।
- 23 मार्च 1940 ई0 के प्रसिद्ध प्रस्ताव का प्रारूप सिकंदर हयात खान ने बनाया और उसे फजलुल हक ने प्रस्तुत किया। खजीकुज्जमा ने उसका समर्थन किया।
- पाकिस्तान नाम कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत अली ने 1939 ई0 में रखा। इसके अंतर्गत पंजाब अफगान प्रान्त, कश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान आते थे।
- मुस्लिमों के लिए एक पृथक् देश की प्रथम बार एक निश्चित अभिव्यक्ति 1930 के मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन के इकबाल के अध्यक्षीय भाषण में हुई थी।
- नेहरू एक राष्ट्रभक्त थे, जिन्ना एक राजनीतिज्ञ थे यह कथन मुहम्मद इकबाल का है।
- जिन्ना ने सरोजनी नायडू को 'हिंदू मुस्लिम एकता का दूत' कहा था।

क्रिप्स मिशन (1942):

- जापान की लगातार बढ़ती हुई शक्ति से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय व्यथित हो गया। अमेरिका, आस्ट्रेलिया व चीन ने ब्रिटेन पर भारत को स्वतंत्र करने के लिए दवाब डाला। परिणामस्वरूप चर्चिल ने 11 मार्च 1942 ई0 को क्रिप्स मिशन की घोषणा की। 23 मार्च 1942 ई0 को क्रिप्स मिशन भारत पहुँचा । 30 मार्च 1942 ई0 को क्रिप्स ने अपनी योजना प्रस्तुत की इसकी मुख्य बातें इस प्रकार है-
    1. युद्ध के बाद एक ऐसे भारतीय संघ का निर्माण का प्रयत्न किया जाए जिसे पूर्ण उपनिवेश का दर्जा प्राप्त होगा। कोई भी प्रांत संघ से बाहर जाने का निर्णय ले सकता है।

2. युद्ध के बाद एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जाएगा जिसमें ब्रिटिश प्रान्तों के चुने हुए प्रतिनिधि तथा देशी रियासतों के प्रतिनिधि शामिल होगें।
3. नए भारतीय संविधान के निर्माण होने तक भारत के रक्षा का उत्तरदायित्व ब्रिटिश सरकार पर होगा।
4. द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद भारत संघ की स्थापना की जाएगी उसे डोमिनियन पद प्रदान किया जाएगा।

- कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों ने क्रिप्स प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया।
- महात्मा गांधी के अनुसार, क्रिप्स प्रस्ताव एक टूटते हुए बैंक के नाम एक उत्तर दिनांकित चेक (Post date cheque upon a crashing bank) था।
- लॉर्ड किनलिथगों ने गांधी जी के आंदोलनों को राजनीतिक फिरौती' कहा।
- क्रिप्स मिशन के साथ कांग्रेस के अधिकारिक वार्ताकार पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं मौलाना आजाद थे।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR